Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2019 SHISRRJ | Volume 2 | Issue 1 | ISSN : 2581- 6306

भवभूति के साहित्य पर वेदों का प्रभाव एवं शास्त्रीय वैदुष्य

डॉ० भारती मेहता
अध्यक्षा, बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड, पटना,
बिहार (भारत)

सारांश – महाकवि भवभूति के साहित्य पर वेदों की प्रतिच्छायारूप बहुधा दृष्टिगोचर होता है। उत्तररामचरित के नान्दी से लेकर मालतीमाधव तथा महावीरचरितादि तक अनेक उदाहरण प्राप्य हैं। भवभूति की पदावलि वेद की शैली से प्रभावित मानी जाती है। इनकी रचनाओं में वैदिक श्रुतिपरम्परा का निदर्शन होता है; जिससे सिद्ध होता है कि श्रोत्रियकुलोत्पन्न भवभूति की रचना वैदिक साहित्य से पूर्णत: प्रभावित है।

प्रमुख शब्द – वाक:, ऋत्विज्, मीमांसा, वेद, नाटक, सहृदय, कवि, पदवाक्यप्रमाणज्ञ।

वेद का प्रभाव संस्कृत वाङ्मय की प्राय: सभी विधाओं पर है। ऋग्वेद के संवाद-सूक्त से नाटक का प्रादुर्भाव माना जाता है। भवभूति की रचनाओं पर वेद का प्रभाव स्पष्टत: परिलक्षित होता है। अन्तर्साक्ष्य और बहिर्साक्ष्य के आधार पर वे नि:सन्देह वैदिक एवं मीमांसक थे। विद्वानों और समीक्षकों ने उनको वैदिक परम्परा का अनुयायी और मर्मज्ञ विद्वान् माना है। उनका वेदज्ञान और पाण्डित्य सर्वदा से शोध का विषय रहा है।

उन दिनों वेदों का अध्ययन करने वाले श्रोत्रिय और उनमें भी सर्वदा सदाचारपूर्वक रहने वाले ब्राह्मण पङ्क्तिपावन कहलाते थे – **ते श्रोत्रिया:, ब्राह्मणा: . . . पङ्क्तिपावना:।** [1] इसी सन्दर्भ में उत्तररामचरित का यह कथन भी द्रष्टव्य है – **काश्यप:, यं ब्रह्माणम्. .।**[2] उक्त सन्दर्भों से स्पष्ट हो रहा है कि भवभूति श्रोत्रिय ब्राह्मण की परम्परा का पालन करने वाले विद्वान् हैं।

पुन: महावीरचरित में भी यह संकेत प्राप्त होता है – **तैत्तिरीया: ...सोमपीथिन ... ब्रह्मवादिनो वसन्ति।** अष्टाध्यायी में उल्लेख है – **श्रोत्रियंश्छन्दोऽधीते।**[3] व्याकरण के अनुसार [छन्दस् + घ] से छन्दस् शब्द की निष्पत्ति होती है–

छन्दोऽधीते इति श्रोत्रिय: छन्द:शब्दस्य श्रोत्रादेश:।[4]

और पद्मपुराण की दृष्टि में–

विद्यावेदव्रतस्नाता ब्राह्मणा: सर्व एव हि
सदाचारपराश्चैव विज्ञेया: पतितपावना:।[5]

वाजपेय यज्ञ करने वाले वेदज्ञ ब्राह्मण कुल में उत्पन्न होने के कारण भवभूति मीमांसा शास्त्र के भी अच्छे ज्ञाता थे, ऐसा उनके नाटकों प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष उल्लेखों से ज्ञात होता है। नाटकों की रचना करने पर भी भवभूति अपने वेदज्ञान एवं पाण्डित्य को सिद्ध करने के लिए तथा अपने समकालीन विद्वानों को बताने के लिए मालतीमाधवम् नाटक में उद्घोष करते हैं –

यद्वेदाध्ययनं तथोपनिषदां सांख्यस्य योगस्य च।

ज्ञानं तत्कथनेन किं न हि ततः कश्चिद्गुणो नाटके ॥

उपरोक्त पद्य में उन्होंने वेद, उपनिषद् के अध्ययन का तथा सांख्य और योग आदि भारतीय दर्शनों के गहन ज्ञान का उल्लेख किया है। उनके काव्यों में विविध प्रसंगों के वर्णन के अवसर वेदादि शास्त्रों का बहुधा उल्लेख हुआ है।
इस वेदादि शास्त्रों के अध्ययनशील संस्कार का प्रभाव महाकवि के रूपकों की पदावली में बहुधा दृष्टिगोचर होता है। वेदों में वचन के अर्थ में वाकः का प्रयोग होता है, तदनुसार उत्तररामचरित में उनका नान्दी पद्य द्रष्टव्य है–

इदं कविभ्यः पूर्वेभ्यो नमोवाकं प्रशास्महे

विन्देम देवतां वाचममृतामात्मनः कलाम्।[6]

वाक की व्याख्या करते समय अथर्ववेद में ऐसा कहा गया है –

पश्च च या पश्चाशच्च संयन्ति मन्या अभि

इतस्ताः सर्वा नश्यन्तु वाका अपचितामिव।। [7]

वाकम् को णमुल् प्रत्ययान्त मानते पर भी छान्दस् कोटि में रखना होगा। लौकिक संस्कृत में यह प्रयोग अप्रचलित है। महावीरचरित के नान्दी–पद्य में परबह्म या राम को 'स्वस्थाय देवाय' कहना लौकिक संस्कृत की परिधि से हटकर 'स्वे महिम्नि प्रतिष्ठितः' वेदवाक्य का संदर्भ सामने लाता है –

अथ स्वस्थाय देवाय नित्याय हतपाप्मने।

त्यक्तक्रमविभागाय चैतन्यज्योतिषे नमः।। [8]

अथर्ववेद में देवयान मार्गों का वर्णन मिलता है–

ये पन्थानो बहवो देवयाना अन्तरा द्यावापृथिवी सञ्चरन्ति

तेषामज्यानि यतमो वहाति तस्मै मा देवाः परि धत्तेह सर्वे॥[9]

शम्बूकवध का प्रसंग अनेक आलोचनाओं का कारण बनता रहा है। भवभूति ने उत्तररामचरित में अभिचारकर्म में रत शम्बूक का वध करते समय को राम के माध्यम से उत्तम मार्ग निर्देशित करते हुए वध का औचित्य प्रतिपादित करते हैं–

भद्र! शिवास्ते पन्थानो देवयानाः प्रलीयस्व पुण्येभ्यो लोकेभ्यः।

भवभूति के अनेक पदप्रयोग वैदिक परम्परा के समानान्तर वर्गीकृत किए जा सकते हैं, उदाहरणस्वरूप घर के लिए संस्त्याय, आरती के लिए आवरण, जाने के अर्थ में सम्पात और प्रगति के अर्थ में तति आदि।

रचना–विधान के साथ उनके रूपकों की अन्तश्चेतना भी वैदिक प्रकाश से दीप्तियुक्त है। यहाँ भारतीय तपोवन और ऋषियों की सांस्कृतिक गरिमा विशेष रूप से रेखाङ्कित किया गया है। महावीरचरित में सारा कथानक–सूत्र विश्वामित्र, शबरतापसी श्रमणा और अगस्त्य द्वारा परिचालित किया जाता है। मालती–माधव के घटना क्रम पद्मावती नगर में स्थित विद्यापीठ द्वारा परिजित किए जाते हैं और उत्तर–रामचरित को करुणा का अमृतमय पुटपाक भूतार्थवादी भगवान् वाल्मीकि द्वारा बना दिया जाता है। वेदों का बहुदेवतावाद यहाँ प्रत्यक्ष दृष्टिगम्य होता है। भवभूति ने राम, शिव, गणेश, सूर्य, भगवती चामुण्डा और अग्नि आदि के दिव्य स्वरूप यथास्थल अङ्कित किए हैं। अनेक प्राकृतिक उपादानों का देवीकरण यहाँ सरलता पूर्वक द्रष्टव्य है, यथा–

विश्वम्भरा भगवती भवतीमसूत (पृथ्वी)।

प्रसन्नपुण्यसलिला भगवती भागीरथी (नदी)।

वनदेवता दूरान्मामुपतिष्ठते (वन)।

भगवति पञ्चवटि! (वृक्ष)।

उज्ज्वलचालासंसारभैरवो भगवानुषर्बुधः (अग्नि)।

ऐसा प्रतीत होता है कि श्रोत्रिय परम्परा का परिवर्धन करते हुए भी प्राचीन काल में अन्त्यज माने जाने वाले अभिनेता नटों के बीच रहने के कारण भवभूति को कुछ दिनों तक सामाजिक अवहेलना सहनी पड़ी होगी। इस पीड़ा की अभिव्यक्ति उनकी पहली कृति मालतीमाधव की प्रस्तावना में प्रकट हुआ है–

पदवाक्य-प्रमाणज्ञो भवभूति म कविनिसर्गसौहृदेन भरतेषु वर्तमानः स्वकृतिमेवंगुणभूयसीमस्माकं हस्ते समर्पितवान्। यत्र खल्वियं वाचोयुक्तिः-

ये नाम केचिदिह नः प्रथयन्त्यवज्ञा

जानन्ति ते किमपि तान् प्रति नैष यत्नः।।[10]

वे महावीरचरित में अपने श्रोत्रिय होने का उल्लेख करते हुए वैदिक प्रसंग उपस्थित करते हैं –

स य एवं विद्वान् मांसमुपसिच्योपहरति।

यावद् द्वादशाहेनेष्ट्वा सुसमृद्धनावरुन्धे तावदेनेनाव रुन्धे।।[11]

अतिथि स्वागत के बीच 'समांस मधुपर्क' का जान–बूझकर उल्लेख करते हैं –

समांसो मधुपर्क इत्याम्नायं बहु मन्यमानाः श्रोत्रियाभ्यागताय वत्सतरौं महोक्षं वा पचन्ति गृहमेधिनः। तं हि धर्मं धर्मसूत्रकाराः समामनन्ति। [12]

मालतीमाधव में पुनः वैदिक होने का संकेत करते हैं –

संज्ञप्यते वत्सतरी सर्पिष्यत्र च पच्यते। [13]

अन्तिम नाट्यकृति महावीरचरित के समय तक पुनः सामाजिक प्रतिष्टा अर्जित कर वे अपने को 'श्रोत्रियपुत्र' कहने लगते हैं।

भवभूति संस्कृत साहित्य के सशक्त स्तम्भ माने जाते हैं। भवभूति मूलतः वैदिक परम्परा के उद्भट विद्वान् हैं। स्पष्ट है कि उनकी रचनाओं पर वेदों की स्पष्ट छाप पूर्णतः परिलक्षित होती है। साथ ही भवभूति की विद्वता असन्दिग्ध थी। उनको पदवाक्यप्रमाणज्ञ एवं मीमांसाशास्त्र का ज्ञाता माना जाता है। काव्यरचना में उनको कलिदास के उपरान्त श्रेष्ठ नाटककार माना जाता है। वे अत्यन्त रसिक और सिद्धहस्त कवि थे। उनके काव्य में कवित्व और पाण्डित्य का अपूर्व समन्वय पूर्णतः परिलक्षित होता है। उनको यह अच्छी तरह ज्ञात था कि केवल पाण्डित्य और वेदज्ञान का नाटक में अधिक उपयोग नहीं है। सफल कवि बनने के लिए वाणी की प्रौढता, शब्दसौष्ठव और अर्थगौरव भी आवश्यक है; जिसका संकेत उन्होंने मालतीमाधव में किया है –

यत्प्रौढत्वमुदारता च वचसां यच्चार्थतो गौरवं।
तच्चेदस्ति ततस्तदेव गमकं पाण्डित्यवैदग्ध्ययोः॥

समकालीन युग में भवभूति का वास्तविक मूल्यांकन नहीं कर पाए। अपनी उपेक्षा से सन्तप्त होकर स्वाभिमानी भवभूति ने मालतीमाधवम् नाटक में ऐसे दोषदर्शियों को चुनौती देते हुए कहा कि ऐसे लोग वस्तुतः उनकी कृतियों का मूल्य नहीं आँक सके। उन्हें विश्वास था कि इस बहुमुल्य रत्न का पारखी अवश्य उत्पन्न होगा; क्योंकि दुनियाँ बहुत विशाल है और काल अनन्त है। मेरी रचना का तिरस्कार करने वाले अहंकारी एवं मिथ्याभिमानी पण्डितों के लिए मैंने काव्य नहीं रचा है। भविष्य में मेरे जैसा समानधर्मा सहृदय अवश्य उत्पन्न होगा; ऐसा मुझे विश्वास है –

ये नाम केचिदिह नः प्रथयन्त्यवज्ञां
जानन्ति ये किमपि तान् प्रति नैष यत्नः।
उत्पत्स्यतेऽस्ति मम कोऽपि समानधर्मा
कालो ह्यं विनिवधिर्विपुला च पृथ्वी॥ [15]

भवभूति ने निम्न पद्य में नीति की शिक्षा के बहाने से अपने गुणों का वर्णन करते हुए कहते हैं –

शास्त्रे प्रतिष्ठा सहजश्च बोधः प्रागल्भ्यमभ्यस्तगुणा च वाणी।
कालानुरोधः प्रतिभानवत्त्वमेते गुणाः कामदुधाः क्रियासु॥[16]

संकेत सूची

1. मालतीमाधवम् – चौखम्भा 71, पृ॰ 10–11
2. उत्तररामचरितम् – साहित्य भण्डार, मेरठ, पृ॰ 13,16
3. महावीरचरित – चौखम्भा पृ॰ 5
4. श्रोत्रियंश्छन्दोऽधीते, अष्टाध्यायी 5.2.84
5. पद्मपुराण। स्वर्गखण्ड। 35
6. उत्तररामचरितम् – **1.1**
7. अथर्व॰ – 6.25.2
8. अथर्ववेद - 6.55.1
9. महावीर॰ – 1.1
10. मालतीमाधव – पृ॰ 12–13
11. अथर्व॰ 9.6.4.7–8
12. उत्तर॰ पृ॰ 285
13. महावीर॰ 3.2
14. मालतीमाधव – 1.10
15. मालतीमाधव – 1.6
16. मालतीमाधव – 3.11